# प्रारंभिक परीक्षा

## आयकर विधेयक 2025

### संदर्भ

लोकसभा ने संशोधित आयकर विधेयक, 2025 पारित कर दिया है।

### प्रमुख प्रावधान -

- यह मौजूदा आयकर अधिनियम, 1961 को प्रतिस्थापित और संक्षिप्त करता है।(2.59 लाख शब्द बनाम 5.12 लाख शब्द)
- अध्यायों की संख्या 47 से घटाकर 23 और धाराओं की संख्या 819 से घटाकर 536 की गई।
- **अधिकारियों को तलाशी के दौरान करदाताओं के व्यक्तिगत ईमेल और सोशल मीडिया एकाउंट्स तक जबरन पहुँच बनाने का अधिकार देता है।**
- **अधिकृत अधिकारियों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में पुस्तकों, दस्तावेज़ों या डेटा के लिए एक्सेस कोड माँगने की अनुमति देता है।**
- यदि कोड प्रदान नहीं किए जाते हैं, तो किसी भी कंप्यूटर सिस्टम के एक्सेस कोड को ओवरराइड करने की अनुमति देता है।
- **पासवर्ड, चैट और संदेशों सहित सभी प्रकार के व्यक्तिगत डिजिटल डेटा को कवर करता है।**
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से आपत्तिजनक साक्ष्य प्राप्त करने के लिए इसे आवश्यक बताया गया है।
- संभावित दुरुपयोग, निजता के उल्लंघन और अधिकारियों को अत्यधिक शक्तियाँ देने के लिए आलोचना की गई है।

**स्रोत:** द हिंदू

# तलाक-ए-हसन

## संदर्भ

**सर्वोच्च न्यायालय** ने हाल ही **में तलाक-ए-हसन की प्रथा की संवैधानिक वैधता पर सवाल उठाने वाली कई याचिकाओं की जांच करने का निर्णय** लिया है।

## तलाक-ए-हसन के बारे में -

- **यह इस्लाम में तलाक का एक न्यायेतर रूप है, जो केवल पुरुषों के लिए उपलब्ध है।**
- इसे मुस्लिम कानून की सभी धाराओं में **निरस्त करने योग्य** और **वैध** माना जाता है।
- **पारंपरिक रूप से पैगंबर मोहम्मद द्वारा अनुमोदित।**
- **प्रक्रिया**: पति तीन बार तलाक कहता है, प्रत्येक तलाक के बीच एक महीने का अंतराल होता है।
- तलाक के बीच के अंतराल को **संयम (इद्दत)** की अवधि कहा जाता है, जो **90 दिनों** तक चलती है।
- **यदि इद्दत के दौरान दंपत्ति सहवास या अंतरंगता फिर से शुरू कर देते हैं, तो तलाक स्वतः ही रद्द हो जाता है।**

## तीन तलाक (तलाक-ए-बिदत) से अंतर -

- **तीन तलाक में, पति एक साथ तीन बार तलाक कहता है, जिससे तलाक तुरंत और अपरिवर्तनीय हो जाता है।**
- तलाक-ए-हसन में एक प्रतीक्षा अवधि (इद्दत) शामिल होती है और यदि तलाक पूरा होने से पहले सुलह हो जाती है, तो इसे रद्द किया जा सकता है।
- **सर्वोच्च न्यायालय ने शायरा बानो बनाम भारत संघ (2017)** में इस प्रथा को **असंवैधानिक घोषित किया, और बाद में मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 2019 ने इसे एक आपराधिक कृत्य बना दिया।**

**स्रोत:** द हिंदू

# डेंगू वायरस (DENV)

## संदर्भ

एक नए अध्ययन में पाया गया है कि डेंगू के विरुद्ध व्यापक, क्रॉस-सीरोटाइप प्रतिरक्षा विकसित करने में **EDE जैसे एंटीबॉडी** एक प्रमुख कारक हैं, जो प्रभावी वैक्सीन विकास के लिए नई आशा प्रदान करते हैं।

## DENV (डेंगू वायरस) क्या है?

- **DENV का तात्पर्य डेंगू वायरस से है, जिसके चार सीरोटाइप (DENV-1, DENV-2, DENV-3, DENV-4) हैं।**
- यह सबसे आम वेक्टर जनित वायरल रोग है, जो मुख्य रूप से **एडीज मच्छरों** द्वारा फैलता है।
- इससे वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य पर बोझ पड़ता है, विशेषकर दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में।

## प्रारंभिक टीकाकरण चुनौतियाँ -

- **प्राथमिक संक्रमण प्रतिरक्षा समस्या:** पहले डेंगू संक्रमण के बाद, प्रारंभिक प्रतिरक्षा (प्राथमिक प्रतिरक्षा) एक अलग सीरोटाइप (एंटीबॉडी-निर्भर वृद्धि) के साथ दूसरे संक्रमण के दौरान गंभीर बीमारी का खतरा बढ़ा सकती है।
- गैर-निष्क्रिय एंटीबॉडी वायरस को प्रतिरक्षा कोशिकाओं में प्रवेश करने में मदद करके बीमारी को बदतर बना सकते हैं।
- सार्वभौमिक टीके का विकास कठिन है क्योंकि प्रतिरक्षा को सभी चार सीरोटाइप में काम करना चाहिए।
- पिछले टीके अक्सर केवल एक या दो सीरोटाइप के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करते थे, जिससे बाद के संक्रमणों के बाद गंभीर डेंगू का खतरा बना रहता है।

## EDE-जैसी एंटीबॉडी क्या हैं?

- **EDE = एनवेलप डाइमर एपिटोप**
- ये एंटीबॉडी डेंगू वायरस के एनवेलप प्रोटीन के एक विशेष हिस्से को निशाना बनाती हैं, जिससे व्यापक, क्रॉस-सीरोटाइप न्यूट्रलाइजेशन संभव होता है।
- इसे वायरस-निष्क्रियीकरण प्रभावों के 42%-65% और ई प्रोटीन-बाइंडिंग प्रभावों के 41%-75% की व्याख्या करने में सक्षम पाया गया।
- यह बीमारी उन लोगों में अधिक प्रचलित है जो पहले कई डेंगू सीरोटाइप के संपर्क में आ चुके हैं।
- डेंगू बीमारी की गंभीरता में कमी के साथ इसका मजबूत संबंध है।
- सार्वभौमिक डेंगू वैक्सीन डिजाइन के लिए एक आशाजनक लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

**स्रोत:** द हिंदू

# पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर(Perito Moreno Glacier)

## संदर्भ

अर्जेंटीना में स्थित **पेरिटो मोरेनो ग्लेशियर**, जिसे लंबे समय से स्थिर माना जाता था, 2019 से तेजी से पतला हो रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण इसके शीघ्र ही बड़े पैमाने पर पीछे हटने की आशंका बढ़ गई है।

## पेरोटी मोरेनो के बारे में -

- **अन्य नाम:** "श्वेत दानव(White Giant)" l
- **अवस्थिति:** एल कैलाफेट शहर के पास, सांता क्रूज़ प्रांत, अर्जेंटीना।
- **भौगोलिक स्थिति:** दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वतमाला में स्थित।
- **संरक्षित क्षेत्र:** लॉस ग्लेशियर्स नेशनल पार्क का हिस्सा, एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल।

# ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्ज़र्वेटरी (OCO)

## संदर्भ

अमेरिकी सरकार नासा के **OCO-2** और **OCO-3** उपग्रहों को बंद करने की योजना बना रही है, जो वायुमंडलीय $CO_2$ और फसल स्वास्थ्य की निगरानी करते हैं। इससे जलवायु परिवर्तन से जुड़े महत्त्वपूर्ण आंकड़ों के नुकसान को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

## ऑर्बिटिंग कार्बन ऑब्ज़र्वेटरी(OCO) के बारे में -

- **उद्देश्य: अंतरिक्ष से वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड ($CO_2$) की निगरानी करने और जलवायु परिवर्तन में इसकी भूमिका का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किए गए समर्पित नासा पृथ्वी-अवलोकन उपग्रहों की श्रृंखला।**
- **पहला मिशन (OCO): फरवरी 2009 में प्रक्षेपित** किया गया, लेकिन प्रक्षेपण यान के फेयरिंग में खराबी के कारण यह कक्षा तक पहुंचने में **असफल** रहा।
- **OCO-2:**
    - **जुलाई 2014 में OCO के प्रतिस्थापन के रूप में लॉन्च किया गया।**
    - वैश्विक स्तर पर वायुमंडलीय $CO_2$ को मापता है और $CO_2$ स्रोतों और सिंक की पहचान करता है।
    - यह निरंतर दिन के समय माप के लिए **सूर्य-समकालिक ध्रुवीय कक्षा** में संचालित होता है।
- **OCO-3:**
    - **2019 में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर स्थापित किया गया।**
    - दिन के विभिन्न समयों पर $CO_2$ का अवलोकन करता है तथा पौधों की वृद्धि और फसल स्वास्थ्य संबंधी अतिरिक्त आंकड़े एकत्र करता है।
- **प्रमुख योगदान:**
    - **$CO_2$ के वितरण का पहला विस्तृत वैश्विक मानचित्र प्रदान किया।**
    - यह दर्शाया कि **बोरियल वन (उत्तरी शंकुधारी वन) पहले की अपेक्षा अधिक $CO_2$ अवशोषित करते हैं।**
    - यह उजागर किया कि सूखा या वनों की कटाई के कारण कार्बन सिंक जैसे वन, कार्बन स्रोत में बदल सकते हैं।
    - जलवायु मॉडलों और $CO_2$ उत्सर्जन कमी रणनीतियों में सुधार करने में मदद की।
    - कृषि निगरानी में सहायता की, जिससे फसल उत्पादन और सूखे की स्थिति का पूर्वानुमान संभव हुआ।

**स्रोत:** इंडियनएक्सप्रेस

# सहकारी चुनाव प्राधिकरण (CEA)

## संदर्भ

सहकारी चुनाव प्राधिकरण (CEA) ने राज्य सहकारी चुनाव प्राधिकरणों के साथ नई दिल्ली में अपनी पहली परामर्श बैठक आयोजित की, ताकि संवाद को मज़बूत किया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि सहकारी समितियों के चुनाव स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से संपन्न हों।

## सहकारी चुनाव प्राधिकरण (CEA) के बारे में -

- **स्थापना: बहु-राज्य सहकारी समितियां (MSCS) अधिनियम, 2002** के तहत गठित।
- **कार्य**: बहु-राज्य सहकारी समितियों के बोर्ड के चुनाव स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से कराना।
- **क्षेत्राधिकार:** केंद्रीय अधिनियम के तहत पंजीकृत सहकारी समितियां जो एक से अधिक राज्यों में संचालित होती हैं, को इसमें शामिल किया गया है।
- **कार्य:**
    - सहकारी समिति चुनावों के लिए मतदाता सूची तैयार करना और उसे अद्यतन करना।
    - चुनाव अधिसूचना जारी करना और संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया की निगरानी करना।
    - चुनावों के सुचारू संचालन के लिए रिटर्निंग अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति करना।
    - MSCS अधिनियम और संबंधित नियमों के तहत चुनाव नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना।
- **संघटन:**
    - केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त अध्यक्ष द्वारा अध्यक्षता।
    - चुनाव प्रबंधन के लिए सदस्यों और कर्मचारियों द्वारा सहायता प्राप्त।
- **राज्य स्तरीय समन्वय:** उन समितियों के लिए राज्य सहकारी चुनाव प्राधिकरणों के साथ काम करता है, जिनका संचालन राज्य और बहु-राज्य दोनों प्रकार से होता है।
- **महत्व:**
    - सहकारी समितियों में लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना।
    - शासन में सदस्यों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है।
    - सहकारी चुनावों में विवादों और कदाचार को रोकता है।

**स्रोत:** पीआईबी

# समाचार में रहे अन्य मुद्दे

- **वैज्ञानिकों ने पाया कि रोडामाइन 6G डाई में भिगोए गए मोर के पंख छोटे लेज़र की तरह कार्य कर सकते हैं, जो संकीर्ण प्रकाश किरणें उत्सर्जित करते हैं।**
    - पंख के अलग-अलग हिस्से विशिष्ट तरंगदैर्घ्य (**574 nm** या **583 nm)** को प्राथमिकता देते हैं और इनके लिए शक्ति की अलग-अलग सीमाएँ होती हैं।

# संपादकीय सारांश

## भारत में इथेनॉल सम्मिश्रण

### संदर्भ

भारत ईंधन आयात में बचत और उत्सर्जन कम करने के लिए इथेनॉल मिश्रण पर जोर दे रहा है, लेकिन इसके सामने चुनौतियां भी हैं।

### इथेनॉल क्या है और इसका उपयोग क्यों किया जाता है?

- **परिभाषा: इथेनॉल ($C_2H_5OH$) एक नवीकरणीय जैव ईंधन है जो बायोमास (जैसे, गन्ना, मक्का, टूटे चावल, गुड़) से शर्करा को किण्वित करके बनाया जाता है।**
- **प्रकृति**: रंगहीन, वाष्पशील द्रव; ऑक्सीजनयुक्त ईंधन।
- **ईंधन में उपयोग**: पेट्रोल के साथ मिलाकर E5, E10, E20 (E = इथेनॉल, संख्या = मिश्रण में इथेनॉल का प्रतिशत) जैसे मिश्रण बनाए जाते हैं।
- **सम्मिश्रण की उत्पत्ति**:
  - **इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम** के तहत इसका विस्तार किया गया।
- **दावा किये गए लाभ**:
  - **कार्बन तटस्थता** (हालांकि व्यवहार में यह विवादास्पद है)।
  - **आयात प्रतिस्थापन**: भारत के लिए, 20% सम्मिश्रण से प्रतिवर्ष लगभग 10 बिलियन डॉलर की बचत हो सकती है।
  - **कम कीमतें** (हालांकि ईंधन पंपों पर हमेशा इसका प्रभाव नहीं दिखता)।
- **वर्तमान स्थिति**
  - **2014:** इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम के तहत मिश्रण स्तर केवल **1.53%** था।
  - **2022:** लक्ष्य से पाँच महीने पहले **10%** मिश्रण हासिल कर लिया गया।
  - **मूल लक्ष्य: 2030** तक **20%** मिश्रण (**E20)** प्राप्त करना।
  - **संशोधित लक्ष्य:** तेज़ प्रगति के कारण **2025** तक का किया गया।
  - **वर्तमान स्थिति (वर्तमान ESY): 2025** के लक्ष्य से पहले ही **E20** मिश्रण प्राप्त कर लिया गया।

**ESY**: इथेनॉल आपूर्ति वर्ष नवंबर से अक्टूबर तक चलता है।

- **भारत में फीडस्टॉक**:
  - सी-हैवी शीरा (चीनी उद्योग का उप-उत्पाद)।
  - क्षतिग्रस्त/टूटा हुआ चावल।
  - मक्का और अन्य स्टार्च आधारित फसलें।

### नकारात्मक पहलू और चिंताएँ -

- **कृषि एवं खाद्य सुरक्षा जोखिम:** चावल और मक्का जैसी फसलों को खाद्य पदार्थों से ईंधन की ओर मोड़ना, विशेष रूप से कमी वाले वर्षों के दौरान।
  - एक बार इथेनॉल अर्थव्यवस्था परिपक्व हो जाए, तो राजनीतिक और आर्थिक दबाव खाद्य आवश्यकताओं की तुलना में उद्योग को प्राथमिकता दे सकता है।
- **आर्थिक सीमाएं:** यदि कृषि इनपुट (जैसे, उर्वरक) का आयात किया जाता है तो आयात प्रतिस्थापन लाभ कम हो जाता है (उर्वरक आयात की लागत प्रतिवर्ष ~10 बिलियन डॉलर है)।
  - इथेनॉल सस्ता होने के बावजूद खुदरा ईंधन की कीमतों में कमी नहीं दिख रही है।
- **तकनीकी / इंजीनियरिंग मुद्दे:**
  - **दक्षता दंड**: पेट्रोल की तुलना में कम ऊर्जा घनत्व।

  - **सामग्री स्थायित्व और संक्षारण**: समय के साथ ईंधन हैंडलिंग प्रणालियों को नुकसान पहुंचा सकता है।
  - **वाहन अनुकूलता**: बीएस 2 मानक (भारत, 2001 से) सुरक्षित रूप से E15 तक का भार संभाल सकते हैं।
    - 2023 से E20 के लिए डिज़ाइन किए गए वाहन।
    - पुराने वाहन E5 से आगे संगत नहीं हो सकते।
- **नीति एवं बाजार संबंधी चिंताएं:**
  - **उपभोक्ताओं के पास कोई विकल्प नहीं**: मिश्रित पेट्रोल डिफ़ॉल्ट है, यहां तक कि पुराने वाहनों के लिए भी जो उच्च इथेनॉल सामग्री के लिए डिज़ाइन नहीं किए गए हैं।
  - **मूल्य संबंधी दावे दिखाई नहीं दे रहे हैं**: इथेनॉल मिश्रण की कम लागत खुदरा कीमतों में परिलक्षित नहीं हो रही है।
  - **पारदर्शिता का अंतर**: वाहन निर्माता पुराने मॉडलों के इथेनॉल सहिष्णुता का खुलासा नहीं कर रहे हैं।
    - पुराने वाहनों के लिए स्पष्ट शमन उपायों का अभाव।
  - **बीमा एवं देयता**: यदि इथेनॉल से क्षति होती है तो सरकार को दावों का समर्थन करना चाहिए।

## भारत के लिए प्रमुख निष्कर्ष / नीतिगत आवश्यकताएं -

- **वाहन अनुकूलता का स्पष्ट खुलासा**: वाहन निर्माताओं को सभी पुराने मॉडलों के लिए इथेनॉल सहिष्णुता प्रकाशित करनी चाहिए।
- **शमन योजनाएँ**: पुराने वाहनों के लिए (जैसे, ईंधन प्रणाली उन्नयन, सामग्री प्रतिस्थापन)।
- **बीमा सुरक्षा उपाय**: सुनिश्चित करना कि इथेनॉल से संबंधित क्षति को कवर किया गया है।
- **खाद्य सुरक्षा संतुलन**: खाद्य फसलों को विस्थापित करने या कमी का जोखिम उठाने से बचें।
- **पारदर्शी मूल्य निर्धारण**: इथेनॉल मिश्रण बचत का लाभ उपभोक्ताओं को दिया जाएगा।
- **मानदंडों के साथ क्रमिक कार्यान्वयन**: भारत E27 मानदंडों को अपना रहा है (ब्राजील का अनुसरण करते हुए), लेकिन विस्तार से पहले तैयारी सुनिश्चित करनी होगी।

**स्रोत:** द हिंदू

# डिजिटल प्रोत्साहन, विशेषकर कक्षा में, पहुँच और सहानुभूति में खामियाँ उजागर करता है

## संदर्भ

- भारत तकनीक-आधारित शासन और सेवा वितरण की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, जहाँ डिजिटलीकरण को दक्षता, पारदर्शिता और व्यापक पहुँच का प्रमुख साधन माना जा रहा है।
    - स्कूलों में एआई-संचालित लर्निंग टूल से लेकर ऑनलाइन पेंशन पोर्टल और केंद्रीकृत विश्वविद्यालय प्रवेश तक, सरकार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में तकनीक को एकीकृत कर रही है।
    - ये पहलें बेहतर पहुँच और आधुनिकीकरण का वादा करती हैं, लेकिन इनके डिज़ाइन और क्रियान्वयन से समावेशन, मानव-केंद्रित दृष्टिकोण और अनपेक्षित सामाजिक-मानसिक प्रभावों को लेकर चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।

## प्रौद्योगिकी-संचालित शासन और सेवा वितरण में हालिया सरकारी पहल -

- **प्रारंभिक शिक्षा में एआई** - महाराष्ट्र में एआई-संचालित आंगनवाड़ियों जैसे पायलट प्रोजेक्ट, जिनमें स्मार्ट बोर्ड, वीआर हेडसेट और प्री-स्कूल बच्चों के लिए इंटरैक्टिव लर्निंग मॉड्यूल का उपयोग किया गया है।
- **स्पर्श पेंशन पोर्टल** - सशस्त्र बलों के दिग्गजों के लिए डिजिटल पेंशन प्रबंधन प्रणाली, जिसका उद्देश्य पहुंच को सुव्यवस्थित करना और कागजी कार्रवाई को कम करना है।
- **केंद्रीकृत ऑनलाइन प्रवेश प्रणाली** - सीयूईटी-आधारित प्रवेश जैसे प्लेटफॉर्म कई संस्थानों को एक ही ऑनलाइन परामर्श प्रक्रिया में एकीकृत करते हैं।
- **डिजिटल इंडिया मिशन** - ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म और सार्वजनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार।
- **राष्ट्रीय एआई रणनीति** - नीति आयोग का दृष्टिकोण स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि जैसे क्षेत्रों में एआई को एकीकृत करना है।
- **चेहरे की पहचान और बायोमेट्रिक प्रणाली** - कल्याणकारी योजनाओं, हवाई अड्डे में प्रवेश (डिजीयात्रा) और कानून प्रवर्तन में उपयोग किया जाता है।

## इन पहलों से जुड़ी चिंताएँ -

- **कमजोर समूहों का बहिष्करण** - सीमित डिजिटल साक्षरता, ग्रामीण क्षेत्रों में खराब कनेक्टिविटी, और बुजुर्ग नागरिकों (जैसे, स्पर्श पेंशन उपयोगकर्ता) के लिए पहुंच संबंधी बाधाएं।
- **मानव-केन्द्रित प्रक्रियाओं का क्षरण** - प्रारंभिक शिक्षा में एआई के कारण शिक्षक-छात्र संबंधों का स्थान स्क्रीन-आधारित अंतःक्रिया द्वारा ले लेने का खतरा है, जिससे भावनात्मक और सामाजिक विकास कमजोर हो सकता है।
- **अति-केन्द्रीकरण और कठोरता** - केन्द्रीकृत प्रवेश प्रणालियाँ प्रक्रियागत अड़चनें पैदा करती हैं और स्थानीय लचीलेपन को सीमित करती हैं।
- **बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव** - आभासी वास्तविकता और एआई के अत्यधिक संपर्क से वास्तविक दुनिया की संवेदी शिक्षा और संबंधपरक विकास कमजोर हो सकता है।
- **तकनीकी नियतिवाद** - यह धारणा कि डिजिटलीकरण अपरिहार्य है, विशिष्ट संदर्भों में उपयुक्तता या जोखिम पर पर्याप्त प्रश्न उठाए बिना।
- **डेटा निजता और सुरक्षा जोखिम** - मजबूत सुरक्षा उपायों के बिना बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत डेटा संग्रह।

## आगे की राह -

- **मानव-केन्द्रित प्रौद्योगिकी डिजाइन** - सुनिश्चित करना कि प्रौद्योगिकी शिक्षा, शासन और सेवा वितरण में मानवीय भूमिकाओं को प्रतिस्थापित करने के बजाय उनका पूरक बने।
- **समावेशी पहुंच और प्रशिक्षण** - डिजिटल साक्षरता अभियान, सहायता प्राप्त सेवा केंद्र और डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए बहुभाषी इंटरफेस।

- **संदर्भ-विशिष्ट अनुप्रयोग** - सभी के लिए एक ही आकार वाले डिजिटल मॉडल से बचना; स्थानीय आवश्यकताओं, क्षमताओं और अवसंरचनात्मक वास्तविकताओं के अनुसार समाधान अपनाना।
- **हाइब्रिड मॉडल** - डिजिटल प्लेटफॉर्म को ऑफलाइन तंत्र के साथ मिश्रित करना, विशेष रूप से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और पेंशन जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में।
- **सतत फीडबैक एवं लेखा परीक्षा** - उपयोगकर्ता फीडबैक, प्रयोज्यता परीक्षण और डिजिटल प्रणालियों की आवधिक समीक्षा के लिए संस्थागत तंत्र बनाना।
- **नैतिक एवं नियामक ढांचे** - मजबूत डेटा संरक्षण कानून, एआई नैतिकता दिशानिर्देश, और एल्गोरिथम पूर्वाग्रह के खिलाफ सुरक्षा उपाय।

**स्रोत:** **इंडियन एक्सप्रेस**

# स्वास्थ्य प्रशासन में नागरिक भागीदारी को पुनर्जीवित करना

## संदर्भ

- हाल के राज्य-स्तरीय पहल, जैसे **तमिलनाडु की मक्कलाई थीडी मरुथुवम** (2021) और **कर्नाटक की गृह आरोग्य** (2024–25), विशेष रूप से गैर-संचारी रोगों के लिए, सक्रिय और घर-घर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने की दिशा में बदलाव को दर्शाती हैं।
    - ये योजनाएँ सेवाओं को नागरिकों के करीब लाती हैं, लेकिन एक अहम सवाल खड़ा करती हैं: क्या नागरिक समान रूप से स्वास्थ्य शासन में भाग लेने और उसे प्रभावित करने में सक्षम हैं?
    - जवाबदेही, भरोसे और बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए सार्थक सामुदायिक भागीदारी अहम है, लेकिन भारत में ऐसी सहभागिता अब भी असमान और अक्सर प्रतीकात्मक बनी हुई है।

## स्वास्थ्य प्रशासन -

- **स्वास्थ्य प्रशासन से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं, संरचनाओं और कर्ताओं से है जो स्वास्थ्य सेवाओं के लिए निर्णय लेने, नीतियाँ निर्धारित करने और संसाधनों के प्रबंधन में शामिल हैं।** भारत में, इसमें अब शामिल हैं:
    - राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर सरकारी निकाय।
    - नागरिक समाज समूह, व्यावसायिक संघ, अस्पताल निकाय और ट्रेड यूनियन।
    - ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण समितियां (वीएचएसएनसी), रोगी कल्याण समितियां, महिला आरोग्य समितियां और वार्ड समितियां जैसे औपचारिक मंच।
    - अनौपचारिक चैनल जैसे सामुदायिक नेटवर्क, गैर सरकारी संगठन और मीडिया वकालत।
- **राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (2005)** ने बिना किसी सीमा के धन और महिलाओं तथा हाशिए के समूहों को योजना में शामिल करके जन भागीदारी को संस्थागत रूप दिया। हालाँकि, ये प्रणालियाँ अक्सर प्रभावी ढंग से काम नहीं कर पातीं।

## स्वास्थ्य प्रशासन में नागरिक भागीदारी का महत्व -

- **जवाबदेही को मजबूत करना:** नागरिक सेवा वितरण की निगरानी कर सकते हैं, अकुशलताओं पर सवाल उठा सकते हैं, तथा यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि स्वास्थ्य बजट और योजनाएं अपेक्षानुसार क्रियान्वित हों।
- **लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा:** भागीदारी लोगों की स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान की पुष्टि करती है , तथा ऊपर से नीचे तक के "लाभार्थी" दृष्टिकोण का प्रतिकार करती है।
    - विशेषज्ञ की राय के साथ-साथ सामुदायिक ज्ञान को मान्यता देकर ज्ञान संबंधी अन्याय से निपटने में मदद करता है।
- **सेवा प्राप्ति और परिणामों में सुधार:** समुदायों और अग्रिम पंक्ति कार्यकर्ताओं के बीच सहयोग से विश्वास बढ़ता है, जिससे निवारक और उपचारात्मक सेवाओं का अधिक उपयोग होता है।
- **अभिजात वर्ग के प्रभुत्व को चुनौती:** समावेशी भागीदारी से स्वास्थ्य प्रणालियों पर चिकित्सा या वाणिज्यिक अभिजात वर्ग के एक छोटे समूह का कब्जा कम हो जाता है, जिससे अधिक न्यायसंगत निर्णय लिए जा सकते हैं।
- **जवाबदेही में वृद्धि:** स्थानीय इनपुट से ऐसे हस्तक्षेपों को डिजाइन करने में मदद मिलती है जो सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हों और समुदाय की आवश्यकताओं के अनुकूल हों, जिससे दक्षता में सुधार होता है।
- **अंतर-क्षेत्रीय कार्रवाई को सुगम बनाना:** नागरिक आवाजें स्वास्थ्य और सामाजिक निर्धारकों जैसे स्वच्छता, पोषण और आजीविका के बीच संबंधों को उजागर करती हैं, जिससे एकीकृत नीतिगत प्रतिक्रियाएं प्रेरित होती हैं।
- **लचीलापन बढ़ाता है:** मजबूत सामुदायिक नेटवर्क संकटों (जैसे, महामारी, आपदा) में तैयारी और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ाता है।

## भारत के स्वास्थ्य प्रशासन में बाधाएँ -

- **नीति निर्माताओं और प्रदाताओं की मानसिकता:** समुदायों को निष्क्रिय लाभार्थियों के रूप में देखा जाता है, न कि अधिकार धारकों या सह-निर्माताओं के रूप में।
    - सामुदायिक अनुभव या सशक्तिकरण के बजाय संख्यात्मक लक्ष्यों से मापा जाता है।
- **कमजोर या गैर-कार्यात्मक मंच:** कुछ क्षेत्रों में, ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण समिति (वीएचएसएनसी) जैसी समितियां स्थापित नहीं हैं।
    - जहां ये मौजूद हैं: अनियमित बैठकें, खराब अंतर-क्षेत्रीय समन्वय, कम उपयोग वाली धनराशि।
- **पदानुक्रमित, चिकित्साकृत प्रशासन:** नेतृत्व में डॉक्टरों का प्रभुत्व, सीमित सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण के साथ।
    - शासन या सामुदायिक सहभागिता में विशेषज्ञता के बजाय वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति।
- **सार्वजनिक भागीदारी का प्रतिरोध:** बढ़ते कार्यभार और जवाबदेही पर चिंताएं।
    - अभिजात चिकित्सा या वाणिज्यिक हितों द्वारा विनियामक कब्जे का भय।
- **नागरिकों के लिए संरचनात्मक बाधाएँ:** स्वास्थ्य अधिकारों के बारे में कम जागरूकता।
    - सामाजिक पदानुक्रम हाशिए पर पड़े समूहों की भागीदारी को सीमित करता है।
    - स्वास्थ्य प्रशासन प्रक्रियाओं में नागरिक साक्षरता का अभाव।
- **वैकल्पिक, टकरावपूर्ण चैनल:** जब औपचारिक रास्ते विफल हो जाते हैं तो नागरिक विरोध प्रदर्शन, कानूनी कार्रवाई और मीडिया अभियानों का सहारा लेते हैं, जो संवाद की अपूर्ण आवश्यकताओं को दर्शाता है।

## आगे की राह/समाधान -

- **समुदायों को सशक्त बनाना:**
    - **प्रसार** - स्वास्थ्य अधिकारों, शासन प्लेटफार्मों और भागीदारी के अवसरों के बारे में व्यापक संचार।
    - **प्रारंभिक नागरिक शिक्षा** - स्कूलों और सामुदायिक मंचों में जागरूकता बढ़ाना।
    - **हाशिये पर पड़े समूहों का समावेशन** - महिलाओं, ग्रामीण गरीबों और सामाजिक रूप से वंचित समुदायों तक सक्रिय पहुंच।
    - **क्षमता निर्माण** - नागरिकों को सहभागी योजना, बजट ट्रैकिंग और निगरानी में प्रशिक्षित करना।
- **स्वास्थ्य प्रणाली के कार्यकर्ताओं को संवेदनशील बनाना:**
    - **दृष्टिकोण में बदलाव** - समुदायों को लक्ष्य के रूप में नहीं, बल्कि साझेदार के रूप में देखें।
    - **नेताओं के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण** - प्रशासकों को सहभागी शासन और सामुदायिक सुविधा में कौशल से सुसज्जित करना।
    - **विकेन्द्रीकृत योजना** - एनएचएम के अंतर्गत कार्यक्रम कार्यान्वयन योजनाओं में नीचे से ऊपर की योजना को मजबूत करना।
- **शासन मंचों को मजबूत करना:**
    - **कार्यात्मक समितियां** - नियमित बैठकें, स्पष्ट भूमिकाएं और असंबद्ध निधियों का उपयोग सुनिश्चित करना।
    - **अंतरक्षेत्रीय समन्वय** - स्वास्थ्य को पोषण, स्वच्छता और सामाजिक कल्याण क्षेत्रों से जोड़ना।
    - **निगरानी एवं जवाबदेही** - प्रदर्शन समीक्षाओं में सामुदायिक फीडबैक शामिल करना।

## निष्कर्ष -

स्वास्थ्य सेवा की घर-घर पहुँच केवल आधी यात्रा है; बाकी आधी यात्रा नागरिकों को स्वास्थ्य प्रशासन के केंद्र में लाने में निहित है। सशक्त समुदायों और उत्तरदायी प्रणालियों के बिना, सर्वोत्तम रूप से डिज़ाइन की गई योजनाएँ भी केवल ऊपर से नीचे तक हस्तक्षेप बनकर रह जाने का जोखिम उठाती हैं। समतापूर्ण और स्थायी स्वास्थ्य परिणामों के लिए एक समावेशी, सहभागी और उत्तरदायी शासन संस्कृति का निर्माण आवश्यक है।

**स्रोत:** द हिंदू